अन्तर्दाह इंजन और शक्ति-चालित पम्प

१८१६. { श्री रा० रा० सिंह :
श्री वाल्मीकी :

क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) अन्तर्दाह इंजनों और शक्ति-चालित पम्पों की विकास परिषद् इन इंजनों और पम्पों की किस्म के वर्गीकरण और मान निर्धारण तथा उनके पुर्जों की पूर्ति के लिये क्या कार्यवाही कर रही है;

(ख) इन इंजनों की किस्म विदेशी इंजनों की तुलना में कैसी है ;

(ग) इन की किस्म सुधारने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं ;

(घ) इन के फालतू पुर्जों का आयात करने के लिये क्या सुविधायें दी जाती हैं ; और

(ङ) इनके फालतू पुर्जों को देश में किस सीमा तक बनाया जा रहा है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई). (क) विकास परिषद् ने इंजनों की परीक्षा करने के लिये प्रतिमानित संहिताएं और प्रक्रियाएं निर्धारित किये जाने की सिफारिश की है । भारतीय प्रतिमानशाला अब इस काम में लगी हुई है । उसके अतिरिक्त परिषद् ने बाजार में असली फालतू पुर्जे आने के महत्व पर भी जोर दिया है । इसकी ओर इंडियन डीजल इंजन मैन्यूफक्चरर्स असोशियेशन का ध्यान दिला दिया गया है ।

(ख) देश में बनी चीजें आयातित चीजों से भली प्रकार मुकाबला करती हैं ।

(ग) परीक्षण करने के प्रतिमानित तरीके अपनाये जाते हैं और निर्माता फर्मों की संख्या थोड़ी ही है, यही बात इन चीजों की किस्म अच्छी बनाये रखने के लिये काफी समझी जाती है ।

(घ) समय समय पर लागू होने वाली नीति के अलावा कोई और विशेष सुविधायें पम्पों के अतिरिक्त पुर्जों के आयात के लिये नहीं दी जातीं । लेकिन निर्माताओं को ऐसे पुर्जे आयात करने की मंजूरी दी जाती है, जिनके बनाये जाने की आशा उनके उत्पादन कार्यक्रमों के अनुसार नहीं की जाती ।

(ङ) होरोजोन्टल स्पिंडल पम्पों के सभी भाग भारत में ही बनाये जाते हैं । डीजल इंजनों के भी ८५=९० प्रतिशत पुर्जे देश में ही बनते हैं । डोपवैल टरबाइन पम्पों के लिये निर्माता सिर्फ स्टील पाइप और स्टेनलैस स्टील के शाफ्टिंग तथा उपकरण ही आयात करते हैं ।

पटसन का माल

१८१७. श्री रा० रा० सिंह : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) अमेरिका को गत छः मास में पटसन का माल भेज जाने के बारे में क्या स्थिति रही है ;

(ख) अमेरिका को पटसन का कौन-कौन सा माल भेजा जाता है;

(ग) क्या अमेरिका को सबसे बढ़िया किस्म का पटसन का माल भेजा जाता है; और

(घ) यदि हां, तो इसके क्या कारण है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) अमेरिका को निम्न परिमाण में जूट का माल निर्यात करने के लाइसेंस दिये गये :—

महीना	परिमाण (टनों में)
जून १९५७	२३,९२०
जुलाई १९५७	१३,६४७
अगस्त १९५७	१६,८६९
सितम्बर, १९५७	१३,०५८
अक्तूबर १९५७	११,६०६
नवम्बर १९५७	२०,२९१

(ख) हैशियन क्लाथ तथा रुई पैक करने के काम आने वाले टाट का मुख्य रूप से निर्यात होता है ।

(ग) तथा (घ) . जी, हां। मिलों में बनने वाला सब से बढ़िया पटसन का माल अमेरिका को निर्यात किया जाता है जहा उसे विशेष कामों में प्रयोग किया जाता है ।

मशीनी खिलौने

१८१८. श्री बाल्मीकी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार इस देश में बनने वाले मशीनी खिलौनो के मूल्यो को घटाने के लिये कोई कार्यवाही कर रही है ; और

(ख) ये खिलौने विदेशी खिलौनों की तुलना मे कितने महंगे पड़ते हैं ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) छोटे पैमाने पर खिलौने बनाने वालों को जो प्राविधिक सहायता दी जा रही है, उसकी वजह से खिलौनों की किस्म में सुधार होगा और उनकी उत्पादन लागत भी कम हो जाने की आशा है ।

(ख) देश में बनने वाले खिलौने विदेशी खिलौनों से महंगे नही पड़ते ।

साइकिल के कारखाने

१८१९. श्री बाल्मीकी : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत में साइकिल के कारखानों में इस समय कितने विदेशी विशेषज्ञ काम कर रहे है ;

(ख) सरकार और निर्माता-गण ने भारतीयों को इस काम में प्रशिक्षित करने के लिये क्या उपाय किये हैं ;

(ग) साइकिल उद्योग के विकास के संबंध में कितने विदेशी विषेषज्ञ भारत आ चुके हैं ;

(घ) क्या अब भी कोई विशेषज्ञ भारत में काम कर रहा है ; और

(ङ) यदि हां, तो वह किस कारखाने में क्या काम कर रहा है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई):(क) तथा (ग) . ११ विशेषज्ञ ।

(ख) आम तौर पर निर्माताओं द्वारा विदेशों से भरती करके बुलाये गये टैकनीशियन इस शर्त पर भारत आते हैं कि वे उपर्युक्त भारतीय टैकनीशियनों को प्रशिक्षित करेंगे जिससे वे धीरे धीरे उनका स्थान ले सकें ।

(घ) तथा (ङ) . सीधे निर्माताओं द्वारा भरती किये गये ११ टैकनीशियन निम्न साइकिल कारखानों में काम कर रहे हैं :—